IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, June 2024

^*lthou dh miU;kl 'kkj' esa vkfnoklh tuthou dk fp=.k**

M,- lhek ;kno
हिन्दी (NET&JRF)

'kks/k lkjk'k

संजीव वर्तमान बोध के उपन्यासकार हैं। अपने उपन्यासों में वर्तमान जनजीवन के प्रत्येक पहलुओं का जीवंत आईना प्रस्तुत किया है। संजीव अपने सभी उपन्यासों में विषय–वस्तु की गंभीर और सघन खोजबीन के बाद इन जनजातीय समाजों की ओर आकृष्ट होते हैं। अपने जीवन का बड़ा हिस्सा जिस क्षेत्र में उन्होंने बिताया वह भी भौगोलिक दृष्टि से आदिवासी समाजों का है। उस समाज की जीवन शैली, लोक–व्यवहार और रीति–रिवाजों को सहानुभूति एवं हार्दिक संवेदना से देखते और अंकित करते हैं। राजनीति एवं प्रशासनिक स्तर पर सक्रिय गठजोड़ किस तरह इस समाज के जीवन को भयावह और बोझिल बनाता है, संजीव की केन्द्रीय चिंता यही है। संजीव रचनात्मक स्तर पर उनकी संघर्ष–चेतना को वाणी देते हैं और उनके संघर्ष में वहीं उनके साथ खड़े दिखाई देते हैं। आदिवासी चिंतन की दृष्टि से संजीव के उपन्यासों का अध्ययन करने पर हमारे सामने केन्द्रीय रूप में आदिवासियों का पीड़ित व शोषित रूप अंकित होता है ।

eq[; 'kCn& आदिवासी, सामाजिक संदर्भ, सहानुभूति,संवेदना,जनजातिय,लोकव्यवहार,पीड़ित।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in